

Vol II Issue V Nov 2012

Impact Factor : 0.1870

ISSN No :2231-5063

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

IMPACT FACTOR : 0.2105

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595

ISSN No.2230-7850

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho Federal University of Rondonia, Brazil	Mohammad Hailat Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801	Hasan Baktir English Language and Literature Department, Kayseri
Kamani Perera Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka	Abdullah Sabbagh Engineering Studies, Sydney	Ghayoor Abbas Chotana Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]
Janaki Sinnasamy Librarian, University of Malaya [Malaysia]	Catalina Neculai University of Coventry, UK	Anna Maria Constantinovici AL. I. Cuza University, Romania
Romona Mihaila Spiru Haret University, Romania	Ecaterina Patrascu Spiru Haret University, Bucharest	Horia Patrascu Spiru Haret University, Bucharest, Romania
Delia Serbescu Spiru Haret University, Bucharest, Romania	Loredana Bosca Spiru Haret University, Romania	Ilie Pinteau, Spiru Haret University, Romania
Anurag Misra DBS College, Kanpur	Fabricio Moraes de Almeida Federal University of Rondonia, Brazil	Xiaohua Yang PhD, USA
Titus Pop	George - Calin SERITAN Postdoctoral Researcher	Nawab Ali Khan College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India	Iresh Swami Ex - VC. Solapur University, Solapur	Rajendra Shendge Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur
R. R. Patil Head Geology Department Solapur University, Solapur	N.S. Dhaygude Ex. Prin. Dayanand College, Solapur	R. R. Yaliker Director Managment Institute, Solapur
Rama Bhosale Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel	Narendra Kadu Jt. Director Higher Education, Pune	Umesh Rajderkar Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik
Salve R. N. Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur	K. M. Bhandarkar Praful Patel College of Education, Gondia	S. R. Pandya Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai
Govind P. Shinde Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai	Sonal Singh Vikram University, Ujjain	Alka Darshan Shrivastava Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar
Chakane Sanjay Dnyaneshwar Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune	G. P. Patankar S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka	Rahul Shriram Sudke Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore
Awadhesh Kumar Shirotriya Secretary, Play India Play (Trust),Meerut	Maj. S. Bakhtiar Choudhary Director,Hyderabad AP India.	S.KANNAN Ph.D , Annamalai University,TN
	S.Parvathi Devi Ph.D.-University of Allahabad	Satish Kumar Kalhotra
	Sonal Singh	

**Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net**



विद्या भारती की गतिविधियाँ

नीना ठाकुर

शोधार्थी, शिक्षा विभाग, सिंधानिया यूनिवर्सिटी, झूझनू (राजस्थान)

परिचय

गतिविधियाँ किसी भी संस्थान के लिए दर्पण का कार्य करती हैं। जिससे हमें उस संस्थान के लक्ष्य, उद्देश्यों व विचारों के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। शिक्षा के क्षेत्र में सरकार के साथ-साथ गैर-सरकारी शिक्षण-संस्थाएँ भी महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। इन गैर-सरकारी शिक्षण संस्थाओं में सबसे महत्वपूर्ण व सबसे बड़ी संस्था है विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान। इस संस्थान का पंजीकरण धारा 21 के अधिनियम पंजीकरण सोसायटी, 1861 के तहत 1977 में हुआ है। विद्या भारती के विद्यालयों का उद्देश्य केवल शिक्षा देना ही नहीं अपितु संस्कारवान सर्वांगीण विकसित बालक का निर्माण करना भी है। अतः विद्या भारती के उद्देश्यों की पूर्ति व सर्वांगीण विकास हेतु विभिन्न गतिविधियों का संचालन किया जाता है जिसका विवरण निम्न प्रकार से है।

विद्या भारती की गतिविधियाँ :-

1. विद्या भारती संस्कृति बोध परियोजना

विद्या भारती संस्कृति शिक्षा संस्थान की स्थापना दिनांक 30 जुलाई 1884 को कुरुक्षेत्र-हरियाणा में हुई तथा इसका विधिवत् पंजीकरण सोसाइटीज रजिस्ट्रेशन एक्ट 1860 की धारा (21) के तहत दिनांक 4 सितम्बर 1984 को हुआ। विद्या भारती संस्कृति शिक्षा संस्थान के द्वारा 'संस्कृति बोध माला' का प्रकाशन किया गया है। इस पुस्तक माला के स्वाध्याय के आधार पर अखिल भारतीय स्तर पर संस्कृति ज्ञान परीक्षा एवम् प्रश्नमंचों का आयोजन किया जाता है। नई पीढ़ी को अपने धर्म, संस्कृति, इतिहास एवम् राष्ट्रियता के ज्ञानयुक्त संस्कार देने हेतु विद्या भारती द्वारा संस्कृति बोध परियोजना का संचालन किया जाता है। यह परियोजना निम्नलिखित कार्यक्रमों के माध्यम से कार्यान्वित की जाती है।

अखिल भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा

अखिल भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा का परीक्षा प्रचलन 1980 के बाद से किया गया है। इस परीक्षा का संचालन प्रतिवर्ष कक्षा 4 से 12 तक के छात्रों के लिए किया जाता है। परीक्षा में उत्तीर्ण छात्रों को प्रमाण पत्र एवं सर्वश्रेष्ठ छात्रों को पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं। इस परीक्षा के माध्यम से छात्रों को अपनी संस्कृति, इतिहास, तीर्थ क्षेत्र, महापुरुषों, धर्म ग्रंथों, प्राचीन भारत में ज्ञान-विज्ञान, खगोल-शास्त्रों आदि विभिन्न विषयों का ज्ञान एवम् संस्कार प्राप्त होते हैं। विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से सम्बद्ध विद्यालयों के राजकीय और अन्य विद्यालयों के छात्र भी इस परीक्षा में सम्मिलित हो रहे हैं। शैक्षणिक वर्ष 2008-2009 में 15,22,791, 2009-2010 में 15,65,251, 2010-2011 में 16,64,691 व 2011-2012 में 16,49,229 से अधिक छात्रों ने भाग लिया।

आचार्यों के लिए संस्कृति ज्ञान परीक्षा

विद्या भारती के आचार्य अपनी अनुपम सांस्कृतिक धरोहर के विस्तृत ज्ञान भंडार से परिपूर्ण होकर छात्र-छात्राओं के लिए ज्ञान के प्रेरणा स्रोत बन सके। इस उद्देश्य से आचार्यों के लिए 1985-86 से इस परीक्षा का आयोजन किया गया। यह परीक्षा शिक्षकों के लिए हर वर्ष प्रवेशिका, मध्यमा एवं उत्तमा तीन स्तरों पर आयोजित की जाती है। 50 प्रतिशत एवम् अधिक अंक प्राप्त करने वाले आचार्यों को आकर्षक प्रमाण-पत्र दिए जाते हैं। जिस विद्यालय के सभी शिक्षक संस्कृति ज्ञान की उत्तमा परीक्षा उत्तीर्ण कर लेते हैं उस विद्यालय को "विशेष सम्मान प्रमाण पत्र" भेजा जाता है। संस्कृति ज्ञान परीक्षा में भाग लेने वाले आचार्यों की संख्या 2008-09 में 44,474, 2009-10 में 48,896, 2010-11 में 48,648 तथा 2011-12 में परीक्षा देने वाले आचार्यों की संख्या 44,021 है।

आचार्यों के लिए अखिल भारतीय प्रज्ञा परीक्षा

अखिल भारतीय प्रज्ञा परीक्षा उन आचार्यों व दीदीयों के लिए है जिन्होंने प्रवेशिका, मध्यमा एवं उत्तमा परीक्षा उत्तीर्ण कर ली होती है। इस परीक्षा में वस्तुनिष्ठ, संक्षिप्त उत्तरात्मक तथा वर्णनात्मक उत्तर वाले प्रश्नों को सम्मिलित किया जाता है। प्रज्ञा परीक्षा में 50 प्रतिशत व उससे अधिक अंक प्राप्त करने वाले आचार्यों को प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जाता है तथा 80 प्रतिशत व इससे अधिक अंक प्राप्त करने वाले आचार्यों को

समारोहपूर्वक सम्मानित किया जाता है।

प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

प्रश्नमंच प्रतियोगिता का आरम्भ 1988 से हुआ। प्रश्नमंच प्रतियोगिता प्रतिवर्ष प्रान्तीय और क्षेत्रीय स्तर पर आयोजित की जाती है। विद्या भारती से सम्बद्ध प्रत्येक प्रदेश समिति के विद्यालय इस प्रतियोगिता में भाग लेते हैं। अखिल भारतीय प्रश्नमंच में क्षेत्रानुसार प्रथम स्थान प्राप्त करने वाला दल भाग लेता है। प्रश्नमंच प्रतियोगिता चार वर्गों में आयोजित की जाती है। ये चार वर्ग हैं – शिशु वर्ग (कक्षा 4 व 5), बाल वर्ग (कक्षा 6, 7 तथा 8), किशोर वर्ग (कक्षा 9 व 10) तथा तरुण वर्ग (कक्षा 11 व 12)। एक टीम में तीन विद्यार्थी भाग लेते हैं। इस प्रकार एक प्रदेश समिति से चारों वर्गों में कुल मिलाकर चार टीमों में बारह विद्यार्थी भाग लेते हैं। प्रत्येक प्रतिभागी को वन्दना, प्रातःस्मरण, एकात्मकता-स्तोत्र, भोजन मन्त्र तथा अखिल भारतीय गीत याद करके आना होता है।

क्र निबन्ध प्रतियोगिता

अखिल भारतीय स्तर पर हिन्दी तथा अपने प्रान्त की मातृभाषाओं में छात्रों के लिए 'निबन्ध प्रतियोगिता' का आयोजन किया जाता है। इस का आयोजन चार वर्गों में किया जाता है – शिशु वर्ग (कक्षा 4 व 5), बाल वर्ग (कक्षा 6, 7 तथा 8), किशोर वर्ग (कक्षा 9 व 10) तथा तरुण वर्ग (कक्षा 11 व 12)। निबन्ध लेखन की शब्द सीमा वर्गानुसार क्रमशः चार सौ, छः सौ तथा आठ सौ शब्दों तक निर्धारित है। प्रान्तीय समिति में प्राप्त सभी निबन्धों में से वर्गानुसार केवल प्रथम स्थान प्राप्त निबन्ध प्रान्तीय समिति द्वारा विद्या भारती कार्यालय में भेजे जाते हैं। निबन्ध विषय भारत के इतिहास, ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र के महापुरुषों एवम् भारतीय संस्कृति से सम्बन्धित होते हैं।

2. अखिल भारतीय खेलकूद समारोह

शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु विद्या भारती ने छात्रों के सर्वांगीण विकास हेतु सामान्य विद्यालय पाठ्यक्रमों के साथ-साथ पांच अनिवार्य विषयों की शिक्षा में शारीरिक शिक्षा को आधारशिला के रूप में रखा है। विद्या भारती ने शारीरिक विकास हेतु पूजनीय डॉक्टर हेडगेवार की जन्म शताब्दी वर्ष 1988-89 से खेलकूद समारोह का आयोजन का आरम्भ किया जो ग्वालियर (मध्य प्रदेश) में सम्पन्न हुआ। यह खेलकूद कार्यक्रम विद्यालय स्तर से आरम्भ होकर जिला, सम्भाग, प्रदेश, क्षेत्र एवम् अन्त में अखिल भारतीय स्तर पर सम्पन्न होते हैं। विद्यालय, जिला, सम्भाग, प्रदेश एवम् क्षेत्र स्तरों पर भाग लेते हुए प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले बालक-बालिकाएँ अखिल भारतीय खेलकूद समारोह में भाग लेते हैं।

3. शिशु वाटिका

विद्या भारती ने भी भारतीय संस्कृति व स्वदेशी परिवेश के अनुरूप शिशु शिक्षा पद्धति "शिशु वाटिका" का विकास किया। इनमें अक्षर ज्ञान व अंक ज्ञान के लिए पुस्तकों व कापियों के बोझ से मुक्त शिशु खेल, गीत, कथा कथन, इन्द्रिय-विकास, भाषा कौशल के द्वारा शिक्षा दी जाती है। शिशु वाटिका कक्षाएँ शिशुओं की आनन्द भरी किलकारियों से गुंजती है। जिसमें शिशु सहज भाव से शिक्षा प्राप्त करते हैं। विद्या भारती ने शिशुओं के साथ उनके माता-पिता एवम् परिवारों को भी प्रशिक्षित एवम् संस्कारित करने का कार्यक्रम "शिशु वाटिका" के अन्तर्गत अपनाया है।

4. संस्कार केन्द्र व एकल शिक्षक विद्यालय

शिक्षा के क्षेत्र में गरीब परिवारों के बच्चों को शिक्षा प्रदान करने के लिए विद्या भारती ने सारे भारत में करीब 16000 संस्कार केन्द्र खोले हैं जहाँ निर्धन परिवारों से सम्बंधित बच्चों को निःशुल्क शिक्षा प्रदान की जा रही है। यह अभियोजना डॉ हेडगेवार की जन्म शताब्दी 1988-89 के अवसर पर विशेष अभियान लेकर प्रारम्भ की गई। बीस साल से अधिक अपने कार्यकाल में विद्या भारती का कार्य दस गुना बढ़ गया है। किन्तु समाज की शैक्षिक आवश्यकताओं की तुलना में ये बहुत कम है। वनवासी क्षेत्रों, पिछड़े क्षेत्रों एवम् उपेक्षित क्षेत्रों में संस्था जहाँ विद्यालय खोलने में असमर्थ है। वहाँ पर संस्कार केन्द्र खोलने की योजना बनाई गई। इन केन्द्रों में साक्षरता, स्वास्थ्य की आदतों, आत्म निर्भरता, स्वावलम्बन, संस्कृति, स्वदेश प्रेम एवम् सामाजिक समरसता के अनौपचारिक कार्यक्रम चलते हैं। ये उन विद्यार्थियों के लिए जो आर्थिक व अन्य बाधाओं के कारण गरीब परिवारों के बच्चे जो औपचारिक स्कूलों में भाग लेने में असमर्थ हैं। दो घण्टे चलने वाले इन निःशुल्क केन्द्रों में एक घण्टा संस्कार के लिए व एक घण्टा शिक्षा के लिए दिया जा रहा है।

विद्या भारती के संस्कार केन्द्र चार प्रकार के क्षेत्रों में चलाए जा रहे हैं जो इस प्रकार से हैं :

शहरों की उपेक्षित बस्तियों एवम् झुग्गी झोपड़ियों में
शहरों के कानवेण्ट या अग्रेजी माध्यम के स्कूलों के बच्चों के लिए
ग्रामीण क्षेत्रों में
आदिवासी दूरदराज पहाड़ी क्षेत्रों में

5. भारतीय शिक्षा शोध संस्थान

आचार्यों के द्वारा शिक्षण में नये-नये प्रयोग एवम् शोध करने के लिए देश के प्रमुख नगरों में शोध प्रकोष्ठ स्थापित किये गये हैं। भारतीय शिक्षा शोध संस्थान, लखनऊ में स्थित है जिसे लखनऊ तथा कानपुर विश्वविद्यालय से मान्यता प्राप्त है। यहाँ से "भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका" का प्रकाशन नियमित रूप से वर्ष में दो बार किया जाता है। यह पत्रिका विशेष रूप से आचार्यों के लिए प्रेरणादायक एवम् लाभप्रद है। शोध कार्य का मुख्य क्षेत्र – शिक्षा दर्शन, शिक्षण पद्धति, भारतीय शिक्षा मनोविज्ञान, अभिवृत्तियों का मापन व परीक्षण, उपलब्धियों का मूल्यांकन व तुलनात्मक अध्ययन आदि शैक्षिक विषयों का अध्ययन करना है।

6. आवासीय विद्यालय

विद्या भारती से सम्बद्ध आवासीय विद्यालय इस समय देश भर में चल रहे हैं। आवासीय विद्यालयों में बालक मुमूर्त में जागरण से रात्रि

10 बजे तक आदर्श दिनचर्या का पालन करते हुए शिक्षण और सदसंस्कारों के वातावरण में विकास करते हैं। इसके साथ ही भारतीय संस्कृति, धर्म एवम् राष्ट्र भक्ति आदि जीवन मूल्यों से उनका जीवन पुष्टि एवम् पल्लवित होकर सदगुणों से सुगंधित होता है। ये विद्या मंदिर अपने-अपने क्षेत्र में समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त कर रहे हैं। देश भर में सौ से अधिक आवासीय और अर्द्ध-आवासीय विद्यालय विद्या भारती द्वारा संचालित हैं।

7. विद्या भारती प्रकाशन

1. "विद्या भारती प्रदीपिका" त्रैमासिक पत्रिका, अध्यापकों के लिए दिल्ली से प्रकाशित होती है।
2. "भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका" द्विमासिक शोध पत्रिका लखनऊ से प्रकाशित होती है।
3. "देवपुत्र" मासिक पत्रिका बाल-किशोर छात्रों के लिए इन्दौर से प्रकाशित होती है।
4. "विद्याभारती संकुल संवाद" मासिक पत्रिका विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान, प्रज्ञा सदन, नई दिल्ली से प्रकाशित होती है। इसके अतिरिक्त अन्य साहित्यिक एवम् संस्कृति ज्ञान परीक्षा सम्बन्धी पुस्तकें कुरुक्षेत्र से प्रकाशित होती हैं।

8. पर्यावरण शुद्धि हेतु वृक्षारोपण

आज विश्व में पर्यावरण प्रदूषण के कारण समाज में भारी चिन्ता है। सभी देश इस प्रदूषण को रोकने के लिए प्रयत्नशील हैं। विद्या भारती ने भी अपने विद्यालयों में छात्रों द्वारा पर्यावरण शुद्धि हेतु वृक्षारोपण अभियान शुरु किया है। छात्रों, शिक्षकों एवम् अभिभावकों में इस अभियान के कारण पर्यावरण के प्रति प्रेम का जागरण हो रहा है। छात्रों द्वारा लाखों की संख्या में वृक्षारोपण हर वर्ष किया जा रहा है।

9. स्वदेशी जागरण

पिछले कुछ वर्षों से बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का भारत में आगमन बढ़ गया तथा भारत में उनके लिए एक बड़ा बाजार तैयार हो गया है। देश की अर्थव्यवस्था पर उनका प्रभाव बढ़ता जा रहा है। इसे रोकने के लिए स्वदेशी मंच के माध्यम से विद्या भारती के विद्यालयों में स्वदेशी जागरण अभियान कार्यक्रम प्रारम्भ किया है। छात्रों, अभिभावकों, आचार्यों तथा प्रबंध समितियों के सदस्यों ने स्वदेशी को अपनाकर स्वयं के जीवन में तो देशभक्ति को व्यवहारिक स्वरूप प्रदान किया है। विद्या भारती ने अपनी संस्कृति बोध परियोजना के पाठ्यक्रम में "स्वदेशी" को स्थाई रूप से सम्मिलित कर लिया है।

10. शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रम

विद्या भारती के उद्देश्यों को क्रियान्वित करने हेतु योग्य शिक्षकों की आवश्यकता है। इसकी पूर्ति हेतु विद्या भारती ने देश भर में शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये हैं। विद्या भारती से सम्बंधित आचार्य प्रशिक्षण कार्यक्रम के अन्तर्गत जयपुर (राजस्थान) में तथा अहमदनगर (महाराष्ट्र) में शिक्षा महाविद्यालय हैं। चार आचार्य प्रशिक्षण कार्यक्रम उत्तर प्रदेश में तथा दो मध्य प्रदेश में संचालित हैं। कुल बारह प्रशिक्षण केन्द्रों के अतिरिक्त अखिल भारतीय, क्षेत्रीय एवम् प्रान्तीय स्तर पर एक सप्ताह से लेकर दो माह तक की अवधि के आचार्यों के प्रशिक्षण का आयोजन किया जाता है। संस्कृत का प्रशिक्षण बंगलौर में 'अक्षरम्' में दिया जाता है। आदिवासी क्षेत्रों में कार्य कर रहे शिक्षकों का प्रशिक्षण रांची (बिहार) में दिया जाता है।

11. विद्यालयों और परिवारों में संस्कारमय वातावरण

विद्या भारती से सम्बंधित शिक्षकों द्वारा छात्रों के माता-पिता व उनके परिवार के सदस्यों से सम्बंध स्थापित किए जा रहे हैं। शिक्षकों का मानना है कि माता-पिता व परिवार के सदस्यों से सम्बंध स्थापित कर छात्रों को संस्कारमय शिक्षा देने में मदद मिलेगी। सांस्कृतिक, धार्मिक एवम् सामाजिक जागरुकता के लिए छात्रों को स्कूलों में संस्कारमय शिक्षा दी जा रही है। इसके साथ-साथ परिवारों में माता-पिता द्वारा भी यह संस्कार दिए जाए तो व्यक्तित्व का समुचित विकास सुनिश्चित है। माता-पिता व छात्रों के बीच निरन्तर सम्पर्क भी जरूरी है।

12. नैतिक एवम् अध्यात्मिक शिक्षा

नैतिक शिक्षा धर्म और कर्तव्य की परिसेमा में आती है। बालक राष्ट्र के सम्भावित निर्माता है। राष्ट्र का विकास बच्चों के चरित्र पर निर्भर करता है। विद्यालय पाठ्यक्रम का केन्द्र-बिन्दु चरित्र निर्माण होना चाहिए। शैक्षणिक क्रियाओं का आयोजन इस प्रकार से हो कि छात्रों में नैतिक गुणों का सहज रूप से विकास हो सके। इसलिए विद्या भारती ने पाठ्यक्रम में ही नैतिक मूल्यों व अध्यात्मिक शिक्षा को शामिल किया जिससे बच्चों में देश भक्ति की भावना का विकास हो सके। विद्या भारती का विश्वास है कि चरित्र निर्माण, भारतीय संस्कृति, धर्म और आदर्श सम्पूर्ण शैक्षिक प्रक्रिया में नीव की तरह कार्य करता है।

13. पूर्व छात्र परिषद्

अनेक राज्यों में विद्या भारती द्वारा संचालित विद्यालयों द्वारा रजत जयंती मनाई गई। इन विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त कर अनेक छात्र प्रतिष्ठित पदों पर कार्यरत हैं। इनके साथ प्रभावी तालमेल बनाए रखने के लिए पूर्व छात्र परिषद् का गठन विद्यालय और राज्य स्तर पर किया जा रहा है। संस्कार और यादों को पुनर्जीवित रखने में उन्हें सक्षम बनाता है। अनेक राज्यों में लाखों की संख्या में पूर्व छात्र सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं।

निष्कर्ष

विद्या भारती ने अपनी गतिविधियों द्वारा शिक्षा को संस्कार संस्कृति नैतिकता तथा आध्यात्मिकता की ओर उन्मुख किया है। विद्या भारती की गतिविधियाँ छात्रों में साहित्यिक सांस्कृतिक और कलात्मक रुचि एवं अभिरुचि के जागरण में सहायक होती हैं। विद्या भारती की प्रतियोगिताओं का आयोजन न केवल विद्यालय स्तर पर बल्कि क्षेत्रीय व राष्ट्रीय स्तर पर भी किया जाता है जिससे छात्रों की आन्तरिक क्षमता का

विकास होता है तथा विभिन्न राज्यों के छात्रों के मध्य संस्कृति का आदान-प्रदान भी होता है। इन प्रतियोगिताओं के माध्यम से छात्रों में देश के गौरवमय इतिहास से प्रेरणा लेने के साथ साथ राष्ट्र के प्रति समर्पण भाव भी जागृत होता है।

संदर्भ

चितकारा, एम.जी. (2004). राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ : राष्ट्रीय लहर. नई दिल्ली : ए.पी.एच. प्रकाशन।
बेस्ट, जे. डब्ल्यू. (1977). शिक्षा में अनुसंधान. नई दिल्ली : प्रिंटिंग हाल ऑफ इण्डिया।
तोमर, लज्जाराम (1999). भारतीय शिक्षा के मूल तत्त्व, विद्या भारती संस्कृति शिक्षा संस्थान, कुरुक्षेत्र।
भारतीय, एन.(2006). युग भगीरथ. श्री गुरु जी. नई दिल्ली : प्रभात प्रकाशन
विद्या भारती. (2003). वी.बी. वार्षिकी, विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान, नई दिल्ली।
www.vidyabharati.org

Publish Research Article International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- * International Scientific Journal Consortium Scientific
- * OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net